वर्तमान परिपेक्ष में रक्षा बन्धन का महत्व

रक्षा बन्धन के दिन बहनें अपने भाईयों की कलाई पर राखी बाँधती हैं और उनके कल्याणार्थ प्रार्थना करती हैं, बदले में भाई भी अपनी बहनों के सम्मान की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करते हैं। वास्तव में यह किसी भी भाई या अन्य के लिए सम्भव नहीं कि वह हर समय अपनी बहन या अन्य महिलाओं की रक्षा कर सके। यदि भाई आयु में छोटा, शारीरिक रूप से कमज़ोर या बहन से कहीं दूर स्थान पर रहता है तो वह कैसे अपनी बहन की रक्षा कर सकेगा।

वर्तमान परिपेक्ष में हमें रक्षा बन्धन के पर्व को अधिक सार्थक रूप से मनाना चाहिए। आजकल महिलाओं पर अत्याचार और यौन उत्पीड़न बढ़ता जा रहा है। महिलाओं के प्रति अपराधों की मूल जड़ है बढ़ती हुई काम वासना। क्या अब समय नहीं जब प्रत्येक भाई अपनी बहन के सम्मान की रक्षा के लिए जो प्रतिज्ञा करता है उसे वह अन्य सभी महिलाओं के लिए भी करे, और जिस दृष्टिकोण से वह अपनी बहन को देखता है वही पवित्र दृष्टि सभी महिलाओं के लिए रखे।

जो लोग महिलाओं के विरूद्ध अपराध करते हैं उनमें विशेष रूप से इस बात की जागृति लाने की आवश्यकता है कि जो सम्मान की रक्षा की ज़िम्मेवारी वे अपनी सगी बहनों के लिए समझते हैं वैसा ही सम्मान पूर्वक व्यवहार वे अन्य महिलाओं से करें।

गीता में वर्णित है कि काम महाशत्रु है। कामी व्यक्ति का व्यवहार पशु जैसा होता है जो समाज के लिए हानिकारक है। ऐसा व्यक्ति एक गम्भीर रोगी के समान है जिसे मान्सिक उपचार और परामर्श की आवश्यकता है। यह कार्य केवल आध्यात्मिक प्रशिक्षण और सशक्तिकरण के द्वारा ही हो सकता है। ब्रह्माकुमारीज़ अथक रूप से इस कार्य में व्यस्त हैं।

आईये प्रतिज्ञा करें कि हम सभी महिलाओं के साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार करेंगे और उनके प्रति पवित्र दृष्टिकोण रखेंगे। सही कहा गया है- जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं।

ब्रह्माकुमारीज़
(मुख्यालय आबू पर्वत)